ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL04292
RNI REG. NO. UPBIL/2014/66218 **PP. No.- 186-190**

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-16, No.- I, Issues-27, YEAR- Jan.-March-2023

किशोरावस्था में सामाजिक उत्तरदायित्व का एक मनोवैज्ञानिक अध्ययन

डॉ0 सीता
सहायक प्राध्यापक– मनोविज्ञान विभाग, उत्तराखंड मुक्त विश्वविद्यालय, हल्द्वानी, (उत्तराखण्ड) भारत

Received-03.02.2023, Revised-10.02.2023, Accepted-15.02.2023 **E-mail: seeta@uou.ac.in**

सारांशः *समाज व्यक्ति से सामान्य तौर पर यह आशा करता है कि उसके द्वारा मान्य कार्य ही व्यक्तियों को करने चाहिये। सामाजिक उत्तरदायित्व हर व्यक्ति और संस्था को निभाना पड़ता है। जिसके फलस्वरूप अर्थव्यवस्था और सामाजिक ताना–बाना के मध्य संतुलन बना रहता है। सामाजिक उत्तरदायित्व एक व्यक्ति के समुदाय से जुड़ाव एवं पहचान के भाव से उत्पन्न होता है। वर्तमान में इंटरनेट के बढ़ते प्रभाव, शिक्षा व व्यवसाय के क्षेत्र में बढ़ते दबाव के कारण किशोर वय वर्ग अपने आप में सीमित व एकाकी होते जा रहा है तथा समुदाय व समाज के साथ दूरी बनाये हुए हैं, जिससे उनमें सामाजिक व्यवहारों का रूप बदलता नजर आ रहा है और उनका सामाजिक समायोजन प्रभावित हो रहा है। अतः परिवार, समुदाय विद्यालय की जिम्मेदारी बनती है कि उन्हें अधिक से अधिक सामाजिक कार्यक्रम में शामिल होने व जिम्मेदारी लेने के अवसर दिये जायें। प्रस्तुत लेख किशोरावस्था में सामाजिक उत्तरदायित्व के विकास एवं विद्यालय एवं अभिभावकों की भूमिका को उजागर करता है।*

कुंजीभूत शब्द– सामाजिक उत्तरदायित्व, अर्थव्यवस्था, इंटरनेट, शिक्षा व व्यवसाय, समुदाय व समाज, सामाजिक समायोजन।

एक बच्चे, किशोर, वयस्क, कर्मचारी, नियोक्ता, में जिम्मेदारी होना एक अद्भुत विशेषता है। इसके अलावा, जिम्मेदारी से परिपक्वता आती है और आत्म–सम्मान बढ़ता है, क्योंकि बच्चा यह पहचानता है कि वह एक सक्षम व्यक्ति है। किशोरों को अपने होमवर्क, अपने कमरे की सफाई के लिए जिम्मेदार होना चाहिए।

वैश्वीकरण और नवीनतम तकनीक का मतलब है कि आज के किशोरों के पास समय और स्थान के बारे में जानकारी तक अधिक पहुंच है, और यकीनन वैश्विक चुनौतियों के बारे में पहले से कहीं अधिक जागरूक हैं। सोशल मीडिया और चौबीस घंटें चलने वाले समाचार चक्र का मतलब है कि छात्रों को हर दिन बड़े मुद्दों का सामना करना पड़ रहा है।

समाज व्यक्ति से सामान्य तौर पर यह आशा करता है कि उसके द्वारा मान्य कार्य ही व्यक्तियों को करने चाहिये यह व्यक्ति के उत्तरदायित्व कहलाते हैं। सामाजिक उत्तरदायित्व दो प्रकार के होते हैं– नैतिक व कानूनी। नैतिक दायित्व का सम्बन्ध व्यक्ति के अन्तःकरण, नैतिकता, उचित–अनुचित, सही–गलत, वांछनीय–अवांछनीय प्रवृत्ति से होता है। इनका पालन करने के लिए दण्ड का भय नहीं होता। कानूनी दायित्वों को पूरा करना व्यक्ति की इच्छा पर निर्भर नहीं होता इनका पालन करना व्यक्ति के लिए अनिवार्य होता हैं।

सामाजिक उत्तरदायित्व– सामाजिक उत्तरदायित्व के अर्थ को समझने के लिए सर्वप्रथम उत्तरदायित्व को समझना आवश्यक है। समाज व राज्य के सदस्य के रूप में व्यक्ति को ऐसे रूप में आचरण करना होता है जो समाज के लिए लाभकारी हो और ऐसे आचरण से दूर रहना होता है, जो समाज के लिए हॉनिकारक हो। समाज व्यक्ति को कुछ विशेष प्रकार के कार्य करने या न करने के सम्बन्ध में निर्देश देता है, इन्हें दायित्व या उत्तरदायित्व कहा है। उत्तरदायित्व को चुनने की आदत एवं व्यवहार के चुनाव के परिणामों को स्वीकार करने के रूप में परिभाषित किया जा सकता है। प्रशिक्षण का उद्देश्य बढ़ते बच्चे को उसके सभी कार्यो के लिए पूर्ण जिम्मेदारी स्वीकार करना सीखना है (ब्लैट्ज 1944)। दूसरी ओर जिम्मेदारी लेने का मतलब अपने खुद के कार्यो को स्वीकार करना, उन्हें अंत तक ले जाने की उम्मीद रखना और ऐसा करना, अपनी योग्यता के अनुसार अच्छी तरह बात करना, वायदा रखना, इन विश्वासयोग्य बातों को वरीयता देना है (वुडकॉक 1948)।

सामाजिक दायित्व के नैतिक विचार या अवधारणा के अनुसार, हर एक सामाजिक इकाई चाहे वह एक संस्था हो या व्यक्ति का कर्तव्य होता है कि वह समाज के भले के लिए कार्य करे। सामाजिक उत्तरदायित्व हर व्यक्ति और संस्था को निभाना पड़ता है। जिसके फलस्वरूप अर्थव्यवस्था और सामाजिक ताना–बाना के मध्य संतुलन बना रहता है।

आर्थिक विकास और सामाजिक विकास के मध्य खींचतान लगी रहती है और सामाजिक उत्तरदायित्व का कार्य इनके बीच संतुलन करना है। यह न केवल व्यापारिक संस्थाओं बल्कि किसी भी ऐसी वस्तु जो समाज को प्रभावित करती है से सम्बन्धित है। यह दायित्व निष्क्रिय रूप (समाज को हॉनि पहुँचाने वाले कृत्यों से दूर रहना) या क्रियाशील (सामाजिक विकासोन्मुख कृत्यों में भाग लेना) रूपों में हो सकता है।

व्यापारिक संस्थायें नैतिक कार्यो में सम्मिलित होकर अपने कार्यक्षेत्र को सरकारी हस्तक्षेप से बचा सकती हैं। उदाहरणतया अगर एक उत्पादन ईकाई अपने सामाजिक उत्तरदायित्व का पालन करे और केन्द्रीय प्रदूषण नियन्त्रण बोर्ड की निर्देशिका का पालन करे, तो संभवतया CPCB उत्पादन ईकाई की जांच न करे।

अनुरूपी लेखक / संयुक्त लेखक

वर्कोविट्ज लूटरमैन (1968) ने सामाजिक उत्तरदायित्व को परोपकार की एक बीमा के रूप में विस्तृत किया है। लेखक ने सामाजिक उत्तरदायित्व को व्यक्तिगत पूर्व निर्धारण (लोगों की सहायता करना जहाँ दूसरों से किसी भी प्रकार की प्राप्ति की आशा न हो के रूप में वर्णित किया है। शोधकर्ताओं ने युवाओं में दूसरों की मद्द के लिए व्यक्तिगत कर्तव्य एवं राजनीतिक एवं सामाजिक मुद्दों (जैसे–बेरोजगारी एवं सामाजिक सुरक्षा) से सम्बन्धित अभिवृद्धि को लेकर सामाजिक उत्तरदायित्व का मापन किया। प्रयोज्यों से उनके देश एवं समुदाय से सम्बन्धित राजनीतिक एवं सामाजिक मुद्दों से सम्बन्धित कथनों के प्रति उनके सहमति स्तर को पूछा गया था। स्केल में उनके प्राप्तांक निश्चित रूप से सामाजिक वर्ग व शिक्षा से सम्बन्धित थे। उच्च प्राप्तांक विश्वास पर आधारित या संगठनों पर आधारित समुदायों में संलग्न थे और राजनीति में ज्यादा इच्छुक थे। इन पूर्व अवधारणाओं में यह सिद्ध है कि यह सामाजिक उत्तरदायित्व व्यक्तियों की स्वार्थहीन कार्यो के प्रति पूर्ण वचनबद्धता है।

'उत्तरदायित्व के दृष्टिकोण को एक राष्ट्र या समाज के बजाय व्यक्ति के अपने निजी समुदाय की ओर संकीर्ण करते हुए, एह्वलिच (2000) ने सामाजिक उत्तरदायित्व के निर्माण को नागरिक उत्तरदायित्व के रूप में संदर्भित किया है। उसने नागरिक उत्तरदायित्व को एक व्यक्ति का समुदाय किस रूप में चलता है, इसकी जरूरतों एवं सम्पत्तियों के बारे में जानकारी, अपने समुदाय के जीवन को बढ़ाने की इच्छुकता एवं मुद्दों को अपने समुदाय के सदस्यों के साथ मिलकर सामूहिक रूप से सुलझाने की समझ के रूप में वर्णित किया है।

बरमन (1997) का मानना है कि सामाजिक उत्तरदायित्व एक व्यक्ति के समुदाय से जुड़ाव एवं पहचान के भाव से उत्पन्न होता है। एक युवा व्यक्ति का उत्तरदायित्व उस समुदाय के ऊपर निर्भर होता है, जिसका वह सदस्य होता है।

यदि एक युवा व्यक्ति एक नजदीकी एवं आस–पास के समुदाय जैसे– उसकी पड़ोस या देश से सम्बन्धित होता है, तो वह अपने पड़ोस या देश के प्रति न्यायपूर्ण कार्य एवं अपने समुदाय के नियमों की सुरक्षा का अनुभव कर सकता है, लेकिन यदि एक युवा व्यक्ति को समुदाय द्वारा अस्वीकृत किया जाता है, तो वह समुदाय से सम्बन्धित या जुड़ नहीं सकता या समुदाय से उसकी पहचान नहीं हो सकती। इसके बजाय सदस्यता के अभाव में वह अपने निकट समुदाय की सदस्यता का त्याग कर सकता है और उत्पीड़न के प्रति एक भूमण्डलीय संघर्ष कर सकता है या विस्तृत समाज से जुड़ सकता है और वह भूमण्डलीय जिम्मेदारी विकसित कर लेता है। इस प्रकार व्यक्ति सामाजिक वातावरणीय स्तर के प्रति उत्तरदायित्व का विकास कर सकता है। जिसमें उसको जुड़ाव या सम्बन्ध होने के विस्तृत भाव का अनुभव होता है।

पीटर सिंगर (1985) का कथन है कि सामाजिक उत्तरदायित्व को नागरिकता के देश से सीमित नहीं किया जा सकता, बल्कि भूमण्डलीय समाज के सदस्य के रूप में व्यक्तियों पर अब भूमण्डलीय सामाजिक उत्तरदायित्व एवं नैतिक उत्तर दायित्व है। वर्मन (1996) के अनुसार किशोरावस्था की योग्यता सामाजिक उत्तरदायित्व को पहचानना और परिभाषित करना है, जिसे यह परिभाषित होता है कि वे कौन हैं सामाजिक संसार में वे कहाँ फिट बैठते हैं तथा अभिकरण के ज्ञान के बोध में आत्मविश्वास का निर्माण करते हैं।

सामाजिक उत्तरदायित्व का लाभ प्राप्त करने का एक पहलू किशोरावस्था में समुदाय की अनुभूति एवं नियन्त्रण से है, उस डिग्री से है जिससे वे आपने आपको व्यक्तिगत उपलब्धि एवं असफलता के लिए उत्तरदायी मानते हैं। किशोर सामाजिक उत्तरदायित्व एवं सामाजिक दक्षताओं को अपने परिवार, समूह, परामर्शदाताओं एवं समुदाय के साथ अन्तःक्रिया द्वारा सीखते हैं। स्कूल स्तर पर एक किशोर अपने स्व एवं सामाजिक उत्तरदायित्व का विकास स्कूल पश्चात रोजगार, अतिरिक्त पाठ्येत्तर क्रियाओं, विद्यालय गतिविधियों एवं समुदाय में सम्बद्धता द्वारा करता है।

आज के युवाओं की भूमिका में आत्मखोज, सामाजिक योगदान एवं विभिन्न युवा भूमिकाओं में प्रयोग की अपर्याप्तता, के कारण खालीपन का प्रभाव है (हॉलॉवे, 1982)। अपने सामाजिक सम्बन्धता की सफलता सुनिश्चित करने के लिए एक किशोर को अपने वैयक्तिक कार्य एवं सामाजिक अन्तःक्रिया के बारे में योग्यता की अनुभूति प्राप्त करने के लिए समय से विकासात्मक प्रक्रिया शुरू कर देनी चाहिए। ''जब हम किशोरों को प्रतिभागिता अनुभव प्रदान करते हैं, जो कि अर्थपूर्ण हैं। तब हम उन्हें अपनी योग्यताओं को उजागर करने, उत्तरदायित्व प्राप्त करने, राजनीतिक प्रक्रिया का बोध प्राप्त करने और नैतिक विचारधारा के प्रति प्रतिबद्ध होने हेतु अनुमति प्रदान करते हैं।

सामाजिक उत्तरदायित्व के मूल घटक– रोजलीन के. पोल्क के अनुसार सामाजिक उत्तरदायित्व के मूल घटक इस प्रकार हैं :

1. किसी व्यक्ति द्वारा लिये गये प्रत्येक कार्य एवं निर्णय के परिणामों की पहचान एवं स्वीकार्यता,
2. स्वयं व दूसरों के प्रति ख्याल रखने की अभिवृत्ति,
3. नियन्त्रण एवं योग्यता का अनुभव,

ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL04292
RNI REG. NO. UPBIL/2014/66218
ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-16, No.- I, Issues-27, YEAR- Jan.-March-2023

4. नियन्त्रण एवं सांस्तिक विभिन्नता की पहचान एवं स्वीकार्यता,
5. अपने एवं दूसरों के मूल मानवाधिकारों की पहचान एवं स्वीकार्यता,
6. नये विचारों अनुभवों एवं व्यक्तियों के प्रति खुलापन होने की योग्यता,
7. सामाजिक एवं सामुदायिक गतिविधियों में स्वयंसेवा के महत्व की समझ,
8. विभिन्न युवा भूमिकाओं के प्रयोग में संलिप्त होने की योग्यता,
9. नेतृत्व, संचार, एवं सामाजिक दक्षताओं का विकास।

सामाजिक जिम्मेदारी का विकास– किशोरों में सामाजिक जिम्मेदारी का विकास करना एक चुनौतीपूर्ण कार्य है। फिर भी कुछ बातों द्वारा उनको सामाजिक उत्तरदायित्व पूर्ण व्यवहार को सिखाया जा सकता है।

नैतिकता की शिक्षा– किशोरों में सामाजिक उत्तरदायित्व के विकास की दिशा में पहला कदम उन्हें नैतिक मूल्य व नैतिकता पढ़ाना। यह कदम किशोरावस्था के पूर्व के वर्षो में शुरू कर देना चाहिये। माता–पिता अपने को आदर्श रूप में प्रस्तुत कर और शिक्षा आधारित कहानी सुनाकर अपने बच्चों को शिक्षा दे सकते हैं। किशोरों को नैतिक रूप से सही और गलत व झूठ की अस्वीकार्यता को सिखाया जाना चाहिये।

नकारात्मक अभिवृत्ति को नकारना– चरित्र विकास के लिए सकारात्मकता एक आवश्यक शीलगुण है। माता पिता जो कि बच्चों को दूसरे व्यक्तियों या परिस्थितियों के प्रति नकारात्मक रवैया दिखाते समय हतोत्साहित कर उनमें सामाजिक उत्तरदायित्व का विकास करने में मदद कर सकते हैं। शिक्षक किशोरों को अपने सहपाठी व शिक्षकों के प्रति आदरपूर्ण व्यवहार करने के लिए प्रेरित कर सकते हैं तथा गलत व्यवहार करने के लिए दण्ड देकर अपनी भूमिका का निर्वाह कर सकते हैं।

संचार– सामाजिक उत्तरदायित्व को एक समुचित तरीकें से पूर्ण करने के लिए किशोरों को समाज के अन्य सदस्यों के साथ संचार व सहयोग सीखना आवश्यक है। शिक्षक नैतिकता आधारित नाटकों जिनमें संचार सम्बन्धी गतिविधियां शामिल हों का आयोजन कर किशोरों में अच्छे संचार कौशल का विकास करने के लिए अपनी भूमिका निभा सकते हैं। सामुदायिक सेवा सम्बन्धी कार्यक्रमों और भ्रमण की व्यवस्था कर शिक्षक किशोरों को सहयोग का कौशल विकसित करना सिखा सकते हैं। सामाजिक उत्तरदायित्व किशोरों के विकास, मूलभूत सामाजिक दक्षताओं से सम्बन्धित है, जो कि उन्हें अपने समुदाय में क्रियाशील एवं उत्तरदायी होने में सहायक है। वे किशोर जो सामाजिक रूप से उत्तरदायी होते हैं, वे विध्वंसात्मक व्यवहार में कम सम्बद्ध पाये जाते हैं। (यूनिस, मैक्लेलिन व येट्स, 1997)।

मनावैज्ञानिकों ने सामाजिक दायित्व बोध को स्वीकार करने में कठिनाई बताई है। ब्रायन व डैवेन पार्ट (1968) के अनुसार सामाजिक उत्तरदायित्व बोध को प्रत्येक स्थिति में सहायतापरक व्यवहार का आधार नहीं माना जा सकता, यदि दूसरे पर आश्रित होने का कारण आश्रित के नियन्त्रण से परे है, जैसे–विकलांगता, रूग्णता या निर्धनता, तो दायित्व बोध के आधार सहायता प्रचुर मात्रा में दी जाती है, किन्तु यदि अपनी न्यूनताओं जैसे–मादक द्रव्यों का व्यसन, जुआ खेलने की आदत के कारण व्यक्ति आश्रित होता है, तब दायित्व बोध का प्रश्न ही नहीं उठता।

श्वार्टज (1977) ने सहायतापरक व्यवहार करने में व्यक्तिगत दायित्व को वहन करने की इच्छा को महत्वपूर्ण माना है। इसके साथ ही साथ यह भी देखा गया है कि सहायतापरक व्यवहार करना मात्र व्यक्ति की इच्छा पर निर्भर नहीं करता, अपितु इसके लिए व्यक्तिगत उत्तरदायित्व की स्वीकृति भी अनिवार्य है।

सामाजिक उत्तरदायित्व के विकास में अभिभावकों एवं शिक्षकों की भूमिका– लॉकडाउन में छात्र दोस्तों के साथ समय बिताने जैसे तनाव दूर करने वाली चीजों को याद कर रहे हैं और वे अलग–थलग और डरा हुआ महसूस कर सकते हैं। छात्रों को स्थानीय और वैश्विक मुद्दों पर चर्चा करने और बातचीत करने के लिए प्रोत्साहित करके, अभिभावक उनकी सामाजिक जिम्मेदारी कौशल विकसित करने में मदद कर सकते हैं और उन्हें अपने जीवन पर अधिक नियंत्रण महसूस करने में सक्षम बना सकते हैं।

दया, परोपकार एवं प्रलोभन का विरोध ये सामाजिक उत्तरदायित्व के विकास के महत्वपूर्ण कारकों के रूप में हैं। ये कारक माता–पिता एवं बच्चें के सम्बन्धों के परिणामस्वरूप प्रारम्भिक रूप से विकसित होते हैं। अतः माता–पिता एवं बच्चों की अन्तःक्रिया को सामाजिक उत्तरदायित्व विकसित करने में महत्वपूर्ण माना गया है। मूलभूत रूप से उत्तरदायित्व आन्तरीकरण एवं स्वनियमन से सम्बन्धित है। माता–पिता की अपेक्षाओं की बच्चें द्वारा पूर्ति करना शुरूआती आन्तरीकरण की स्पष्टता है।

उपलब्ध साहित्यों में यह बताया है कि प्रभुत्वशाली पैतृत्व बच्चों में सकारात्मक विकास के परिणामों से सार्थक रूप से सम्बन्धित है (बेल्सकी, 1984; बॉमरिन्ड, 1991) साथ ही यह पैतृक ढंग किशोरों के सामाजिक उत्तरदायित्व से जुड़ा है। माता–पिता की अपेक्षायें और पालन–पोषण के बीच की पारस्परिक क्रिया सामाजिक उत्तरदायित्व के प्रति जागरूकता लाती है। इसके अतिरिक्त प्रभुत्वशाली माता–पिता अपने बच्चों के साथ खुला संप्रेषण करते हैं, जिसमें माता–पिता बच्चों के विचारों को

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-16, No.- I, Issues-27, YEAR- Jan.-March-2023

सुनते है एवं अपने आपको में अभिव्यक्ति करने से बच्चों में सामर्थ्य एवं उच्च आत्मविश्वास पैदा होता है (मैक्काबी व माटिन, 1983) और यहीं पर आत्मक्षमता का उच्चस्तर, स्व–नियमन दया, एवं मूल्यों के आन्तरीकरण बच्चों के सामाजिक उत्तरदायित्व के उच्चस्तर को विकसित करता है। (स्केल व अन्य, 2000; कॉनराड हेडिन, 1981)।

सामाजिक उत्तरदायित्व आर्थिक, पर्यावरणीय और सामाजिक स्थिरता का एक घटक है, जो समुदायों के जीवन की गुणवत्ता को प्रभावित करता है। यह अनुकरणीय नागरिकों के दृष्टिकोण और व्यवहार और एक स्थिर समाज के निर्माण के लिए समर्थन से संबंधित है।

अध्ययनों में पाया गया है कि सामाजिक उत्तरदायित्व व इसके विभिन्न आयाम शैक्षिक उपलब्धि के विभिन्न पहलुओं से सकारात्मक रूप से सम्बन्धित हैं (डेंगा (1999)। स्कूल कार्यक्रम व उनसे जुड़ें मूल्य इस तरीकें से बनाये गये हैं, जो सामाजिक उत्तरदायित्वपूर्ण व्यवहार को प्रोत्साहित कर सकें। जिन विद्यार्थियों का व्यवहार स्कूल की अपेक्षा के अनुरूप नहीं होता वे प्रायः अधिक रूप से समस्या ग्रसित रहते हैं।

जून 2021 में इंटरनेशनल जर्नल ऑफ बिहेवियरल डेवलपमेंट में प्रकाशित अध्ययन के अनुसार, जो स्कूल अपने छात्रों को अपने सहपाठियों की भावनाओं की देखभाल करने और अपने साथियों के साथ संघर्ष को शांतिपूर्वक हल करने के लिए प्रोत्साहित करते हैं, bulling की घटनाओं को कम कर सकते हैं। शिक्षक अगर दूसरों की परवाह करने और विवादों को सुलझाने के लिए एक साथ काम करने के लिए प्रोत्साहित करते हैं, और स्पष्ट नियमों के साथ कक्षा के माहौल को बढ़ावा देते हैं, अपने सहपाठियों द्वारा कम आक्रामक और हिंसा का सामना कम करते हैं।

स्कूल एक ऐसे वातावरण को बढ़ावा देकर सामाजिक जिम्मेदारी का पोषण कर सकता है जो छात्रों को सीखने और दयालु होने और दूसरों के साथ मिलकर शामिल करने के निष्पक्षता और सकारात्मक सामाजिक संबंधों को जोड़ती है। उदाहरण के लिए, शिक्षक छात्रों को अपने कार्यों के लिए जिम्मेदार महसूस करने, दूसरों की मदद करने और जरूरत पड़ने पर सहायता लेने के लिए प्रोत्साहित कर सकते हैं। एक प्रभावी शिक्षक को हमेशा इस साधारण तथ्य के प्रति सचेत रहना चाहिए कि बच्चे जीविकोंपार्जन के लिए स्कूल जाते हैं। स्कूल उनका काम है, उनकी आजीविका है, उनकी पहचान है। इसलिए, बच्चे के सामाजिक विकास और आत्म–अवधारणा में विद्यालय द्वारा निभाई जाने वाली महत्वपूर्ण भूमिका को मान्यता दी जानी चाहिए। यहां तक कि अगर कोई बच्चा कक्षा में अकादमिक सफलता का आनंद ले रहा है, तो स्कूल के बारे में उसका दृष्टिकोण श्रेणियों में आते हैं–

अस्वीकृत – वे छात्र जो सहपाठियों द्वारा लगातार उपहास, डराने–धमकाने और उत्पीड़न का शिकार होते हैं।

अलग–थलग वे छात्र, जिन्हें प्रत्यक्ष तौर पर खारिज नहीं किया जाता है, लेकिन सहपाठियों द्वारा उनकी उपेक्षा की जाती है और वे स्कूल के सामाजिक पहलुओं में शामिल नहीं होते हैं।

विवादास्पद – जिन छात्रों ने सामान्य हितों या निकटता के आधार पर दोस्तों का एक मंडली स्थापित की है, लेकिन शायद ही कभी उस घेरे से आगे बढ़ते हैं।

लोकप्रिय – वे छात्र जिन्होंने विभिन्न समूहों के बीच सफलतापूर्वक सकारात्मक संबंध स्थापित किए हैं।

इसके अतिरिक्त सीखने की अक्षमता वाले कई छात्र खुद को अस्वीकृत या अलग–थलग उपसमूहों में पाते हैं। निम्न सामाजिक आर्थिक स्थिति वाले की प्रतिष्ठा उनके पूरे स्कूल करियर में उन्हें परेशान करती है। ऐसे छात्रों को अपना दृष्टिकोण बदलने में शिक्षक के लिए छात्रों के सहपाठियों की सहायता करना महत्वपूर्ण है। इस प्रकार से स्कूल बच्चों के सामाजिक और भावनात्मक कल्याण पर ध्यान दे सकते हैं।

सजा बदमाश बच्चे को संशोधित करने का एक अत्यंत अप्रभावी तरीका है। यदि एक बच्चे को अस्वीकार करने के लिए शिक्षक दूसरे को दंडित करते हैं, तो केवल अपने सहपाठी के प्रति नाराजगी को बढ़ाते हैं। हालाँकि, बच्चे की स्वी.ति के स्तर को कई तरीकों से बढ़ाया जा सकता है ।

शिक्षक को ष्प्रतिभा खोजष बनना चाहिए। अस्वीकृत बच्चे के विशिष्ट हितों, शौक या शक्तियों को निर्धारित करने का प्रयास करें। यह चर्चाओं, साक्षात्कारों या सर्वेक्षणों के माध्यम से पूरा किया जा सकता है। एक बार जब आप बच्चे की ताकत की पहचान कर लेते हैं, तो इसे बहुत ही सार्वजनिक तरीके से मनाएं। उदाहरण के लिए, यदि छात्र की गानें में विशेष रुचि है, तो उसे कार्यक्रमों में प्रदर्शन करने को प्रोत्साहित किया जा सकता है । टीम का नेतृत्व देकर एक अस्वीकृत या अलग–थलग बच्चे को अपनी स्थिति को बढ़ाने में मदद की जा सकती है।

सामाजिक स्थिति और जरूरतों पर चर्चा करने के लिए बच्चों के माता–पिता को सम्मेलन में किया जा सकता है।

वर्तमान में कई ऐसे सामाजिक एवं स्वास्थ्य सम्बंधित मुद्दें हैं, जिनके जागरूकता समबन्धी कार्यक्रमों की तैयारी किशोरों को सौंपी जा सकती है, जिससे उन्हें समाज में अपनी पहचान बनाने में मदद मिलेगी और उनमें सामाजिक जिम्मेदारी का

विकास होगा।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. एह्रलिच, टी. (एजकेशन) (2000), सिविक रिस्पॉन्सिविलिटी एण्ड हायर एजूकेशन,फॉनिक्स, एरिजोना ऑरिक्स प्रेस।
2. डेंगा (1999)। डेंगा, डी.आई. (1999), इनडिसीप्लीन इन स्कूलस, जरनल ऑफ एनकाप्स, 2 47–51.
3. यूनिस (1997) युनिस, जे. व येट्स, एम. (1997), कम्यूनिटी सर्विस एण्ड सोशल रिस्पान्सिबिलिटी यूनिवर्सिटी ऑफ शिकागो प्रेस शिकागो।
4. सिंगर, पी. (1985), फैमिन, एफलूएन्स एण्ड मॉरालिटी, इन सी, आर. बीट्ज, एमकोहेन, टी. स्कैलन एण्ड ए. जे. सिम्मो।
5. श्वार्टज,एस.एच. (1977), नॉरमेटिव इन्लुएन्स ऑन ऑल्ट्रिज्म. इन वर्कोविट्ज (एजूकेशन) एडवान्स इन एक्सपेरिमेन्ट सोशल साइकोलॉजी, वॉल्यूम 10, न्यूयार्क एकेडमिक प्रेस।
6. Berkowitz,1972, बर्कोविट्ज, एल. एण्ड लटरमेंन, के.जी. (1968), ड ट्रेडीसनी सोशली रिस्पान्सिबल पर्सनेलिटी, पब्लिक ओपिनियन क्वाट्रली, 32, 1969–1985.
7. ब्लैट्ज, डब्ल्यू. इ. (1944), अण्डरस्टेंडिग द यंग चाइल्ड, न्यूयार्क डब्ल्यू.एम. मॉरो एण्ड कम्पनी।
8. Polk, K.R. (2000). "Social Responsibility. Developing competence." Society.24(3), 40- 43.
9. Maccoby, E. E., & Martin, J. A. (1983). Socialization in the context of the family: Parent-child interaction. In P. H. Mussen (Ed.), Handbook of child psychology: Vol. 4 (pp. 1-101). New York: John Wiley & Sons.
10. Berman, S. (1997). Social Consciousness and the Development of Social Responsibility. Albany, NY: State University of New York Press.
11. https://www.ldonline.org.

*****